Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) __________________________

   (Name) ____________________________

2. (Signature) __________________________

   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.______________________________

(In words)

J 0 3 1 0

Test Booklet No.

Time : **2 $^1/_2$** hours] [Maximum Marks : **200**

PAPER-III
PHILOSOPHY

Number of Pages in this Booklet : **24** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग से दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I
खंड – I

This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

इस खंड में **बीस–बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. Make an assessment of the interpretation of Mahāvākyas by Rāmānuja and Śaṅkara.
रामानुज और शंकराचार्य द्वारा महावाक्यों की व्याख्या का मूल्यांकन कीजिए ।

OR / अथवा

How does Kant develop his critical philosophy in the context of Rationalism and Empiricism ?
बुद्धिवाद तथा अनुभववाद के प्रसंग में कांट किस प्रकार अपने समालोचनात्मक दर्शन को विकसित करते हैं ?

2. Present a critique of modern civilization with reference to Gandhi.
महात्मा गाँधीजी के संदर्भ में आधुनिक सभ्यता की समीक्षा प्रस्तुत कीजिए ।

OR / अथवा

Examine Aristotelian critique of Plato's theory of ideas.
प्लेटो के प्रत्यय सिद्धान्त की अरस्तू द्वारा की गई समीक्षा का परीक्षण कीजिए ।

SECTION – II
खंड – II

This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I
ऐच्छिक – I

3. Is religion universal ? Explain in the light of the basic tenets of Sikh Religion.
क्या धर्म वैश्विक है ? सिख धर्म के मूल सिद्धान्तों के प्रकाश में इसे स्पष्ट कीजिए ।

4. Explain the view of Zoroastrianism on the problem of evil.
अशुभ की समस्या पर पारसी धर्म के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए ।

5. Is religion irrelevant for present moral & social values ? Give your views.
क्या धर्म वर्तमान नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के लिए अप्रासंगिक है ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – II
ऐच्छिक – II

3. Examine the concepts of acquaintance and description with reference to Russell.
रसेल के संदर्भ में परिचय तथा विवरण की अवधारणाओं का परीक्षण कीजिए ।

4. Discuss the Semantic theory of Frege.
फ्रेगे के शब्दार्थ-विज्ञान विषयक सिद्धान्त की विवेचना कीजिए ।

5. Account for the theory of speech-acts in Austin.
ऑस्टिन के दर्शन में कथन-कर्मों के सिद्धान्त के औचित्य का प्रतिपादन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – III
ऐच्छिक – III

3. Examine the basic features of Phenomenology.
दृश्य-प्रपंच शास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों का परीक्षण कीजिए ।

4. Bring out the implications of Husserl's phenomenological method.
हूसर्ल के दृश्य प्रपंचात्मक पद्धति के आपादनों को स्पष्ट कीजिए ।

5. Define hermeneutics. Examine the possibilities of agreement in interpretation.
शास्त्र व्याख्या विज्ञान की परिभाषा दीजिए । व्याख्या में सहमति की संभावनाओं का परीक्षण कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – IV
ऐच्छिक – IV

3. What do you mean by Khyātivāda ? Explain Anirvachanīyakhyātivāda of Advaitā Vedāntā.
'ख्यातिवाद' से आपका क्या अभिप्राय है ? अद्वैत वेदान्त की अनिवर्चनीय ख्याति को स्पष्ट कीजिए ।

4. Give a brief account of Rāmānuja's view of Brahma.
रामानुज के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप का संक्षिप्त निरूपण कीजिए ।

5. Explain the different conceptions of Bhakti as a means or Sādhanā of liberation, according to Madhva, Vallabha and Nimbārka.
मध्व, वल्लभ और निम्बार्क के अनुसार मोक्ष के साधन के रूप में भक्ति की विभिन्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – V
ऐच्छिक – V

3. Write, in brief, Gandhi's view on the upliftment of women.
   महिला-उत्थान पर गाँधीजी के विचारों को संक्षेप में लिखिए ।

4. Write about Gandhi's view on means-end relationship.
   साधन-साध्य सम्बन्ध के बारे में गाँधीजी के विचारों को लिखिए ।

5. Explain Gandhi's concept of 'Swarāj'.
   गाँधीजी के 'स्वराज' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए ।

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Explain, with example, different kinds of cause (Kāraṇa) admitted by the Vaiseṣikas.

वैशेषिकाओं द्वारा मान्य कारण के विभिन्न रूपों को सोदाहरण समझाइए ।

7. What is śabdagraha ? Explain any two means of śabdagraha.

'शब्द-ग्रह' क्या है ? 'शब्दग्रह' के किन्हीं दो अर्थों को समझाइए ।

8. Explain different types of causes admitted by Aristotle.
अरस्तू द्वारा स्वीकृत कारण के विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट कीजिए ।

9. Explain correspondence theory of truth.
सत्य के संवादिता सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए ।

10. Explain pañcāvayavīnyāya indicating the necessity of each avayava.
प्रत्येक अवयव की अनिवार्यता को संसूचित करते हुए पंचावयवी न्याय का विवरण दीजिए ।

11. What are the different types of puruṣārthas ? Explain mokṣa as paramapuruṣārtha.
पुरुषार्थों के विभिन्न प्रकार कौन से हैं ? परम पुरुषार्थ के रूप में मोक्ष को स्पष्ट कीजिए ।

12. Explain the main features of Mill's utilitarianism.
मिल के उपयोगितावाद को स्पष्ट कीजिए ।

13. Explain, with example, the traditional square of opposition.

'पारम्परिक विरोध चतुष्कोण' को सोदाहरण समझाइए ।

14. Explain the vedic notion of Ṛta as a cosmic order.

एक वैश्विक व्यवस्था के रूप में 'ऋत' की वैदिक अवधारणा की व्याख्या कीजिए ।

SECTION – IV
खंड – IV

This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words. **(5 × 5 = 25 marks)**

इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Gauḏapāda uses many words which were frequently used in the Mahāyāna works. It may be pointed out that these words were not the monopoly of the Mahāyāna. They were the current philosophical coins of the day and Gauḏapāda had every right to use them. They were the heritage of the language. The impartial spirit of Gauḏapāda is to be much admired. His breadth of vision, his large-heartedness, his broad intellectual outlook and his impartial spirit add to his glory and greatness. He has respect for Buddha. He frankly admits that in certain respects he agrees with Shūnyavādins and Vijñānavādins. But this should never mean that Gauḏapāda is a crypto-Buddhist. He is a thorough-going Vedāntin in and out. His mission is to prove that Mahāyāna Buddhism and Advaita Vedānta are not two opposed systems of thought, but only a continuation of the same fundamental thought of the Upaniṣads. He has based his philosophy on the Upaniṣads. When he says in the end 'this truth was not *uttered* by Buddha', what he means is that his own philosophy as well as philosophy of Buddha and of the Mahāyāna so far as he agrees with it, both are directly rooted in the Upaniṣads, that Buddha preached this Upaniṣadic Truth not by words but by silence, that his (Gauḏapāda's) preaching is the essence of the Vedānta, that it is not an original contribution of Buddha or of Buddhists.

गौड़पाद बारम्बार उन शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनका प्रयोग महायान के ग्रंथों में हुआ था । यह समझ लिया जाना चाहिए कि इन शब्दों पर महायान का एकाधिकार नहीं था । ये तो उस समय के प्रचलित दार्शनिक सिक्के थे और उनका प्रयोग करने में गौड़पाद पूर्णतया सक्षम थे । ये शब्द तो भाषा की विरासत थे । गौड़पाद का

यह निष्पक्ष भाव अत्यन्त सराहनीय है । उनकी दूरदृष्टि विशाल है, उनकी खुलदिली, उनका व्यापक बौद्धिक दृष्टिकोण और उनके निष्पक्ष भाव उनकी गरिमा और बड़प्पन को चार चाँद लगाते हैं । उनके मन में बुद्ध के प्रति श्रद्धा है । वह स्पष्टतया इस बात को मानते हैं कि उनकी किसी सीमा तक शून्यवादियों और विज्ञानवादियों से सहमति है । परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं लिया जाना चाहिए कि गौड़पाद प्रच्छन्न बौद्ध थे । वे तो पूर्णतया पक्के वेदान्ती हैं । उनका उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि बुद्ध धर्म के महायान और अद्वैत वेदान्त कोई दो विरोधी विचारधाराएँ नहीं हैं अपितु उपनिषदों की मूल विचारधारा की निरन्तरता मात्र हैं । जब अन्त में वे कहते हैं कि इस सत्य का 'बखान' बुद्ध द्वारा नहीं किया गया, तो इससे उनका भाव यही है कि उनका अपना दर्शन और बुद्ध का दर्शन तथा महायान का दर्शन जहाँ तक वह इससे सहमत हैं, दोनों ही का मूल सीधे रूप से उपनिषदों में है । इसी उपनिषदों में निहित सत्य का बुद्ध ने शब्दों द्वारा नहीं, मौन रह कर ही उपदेश दिया । गौड़पाद का उपदेश भी वेदान्त का सार है और उनका मत है कि यह बुद्ध अथवा बौद्धों का कोई मूल योगदान नहीं है ।

15. Why Gauḏapāda uses terms from Mahāyāna works ?
महायान ग्रंथों की शब्दावली का प्रयोग गौड़पाद ने क्यों किया ?

16. Why words used by Gauḏapāda from Mahāyāna works are not the monopoly of Mahāyāna ?
गौड़पाद द्वारा महायान ग्रंथों में प्रयुक्त शब्दावली पर महायान का एकाधिकार क्यों नहीं था ?

17. Why Gauḏapāda is not a Crypto-Buddhist ?

गौड़पाद प्रच्छन्न-बौद्ध क्यों नहीं हैं ?

18. Where and how truth is rooted according to Gauḏapāda ?

गौड़पाद के अनुसार सत्य का मूल कहाँ है और क्यों है ?

19. How does Gauḏapāda treat the preaching of the Buddha ?

गौड़पाद बुद्ध के उपदेशों का प्रयोग किस प्रकार करते हैं ?

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....